सदस्य बनें
सच और सरोकार की पत्रकारिता से जुड़ें
वार्षिक सदस्यता : ₹ 500 मात्र
पूरा वर्ष अखबार निःशुल्क
पैनल विज्ञापन दें
अपने व्यवसाय/संस्था का प्रचार करें 'जन जन विचार' में।
किफायती ● प्रभावी ● विश्वसनीय
संपर्क : 69001 26012

जन जन की बात जन जन तक
साप्ताहिक
जन जन विचार

सनातन का सूर्योदय (पृष्ठ -4)

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 15 May 2026 :: Vol-18 Year-1 :: शुक्रवार । 15 मई 2026 । शक संवत 1948 । ज्येष्ठ । कृष्ण । त्रयोदशी । :: पृष्ठ-8 । मूल्य - 5 रुपए

जन चिंतन
धनेश्वर चौधरी

अब और नहीं

उदयनिधि स्टालिन का 'सनातन को मिटाने' वाला बयान केवल शब्दों का विवाद नहीं, बल्कि करोड़ों हिंदुओं की आस्था, परंपरा और भारत की सांस्कृतिक आत्मा पर सीधा हमला है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि इस बयान पर तथाकथित सेक्युलर राजनीति की चुप्पी साफ संकेत देती है कि हिंदू भावनाओं को चोट पहुंचाना अब कुछ दलों के लिए राजनीतिक फैशन बन चुका है। गौरतलब हो कि तमिलनाडु विधानसभा में एम के स्टालिन के बेटे और नेता विपक्ष बने उदयनिधि स्टालिन ने सनातन को बांटने वाला बताकर इसके समूल नाश की बात कही थी। उन्होंने जब यह बयान दिया था तब मुख्यमंत्री विजय सदन में बैठे हुए और हाथ जोड़कर एक प्रकार से मौन सहमति दी

सनातन पर प्रहार के खिलाफ हिंदुओं को जागना होगा

शेष पृष्ठ 2 पर

हिमंत राज 2.0 शुरू

पहली बैठक में ही यूसीसी मसौदा मंजूर

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम की नई सरकार ने अपने पहले ही मंत्रिमंडल की बैठक में यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) के मसौदे को मंजूरी देकर यह साफ संकेत दे दिया है कि मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की दूसरी पारी केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि वैचारिक एजेंडे को आगे बढ़ाने वाली होगी। 26 मई को विधानसभा में पेश होने वाला यह प्रस्ताव आने वाले दिनों में असम की राजनीति और सामाजिक विमर्श का सबसे बड़ा मुद्दा बनने जा रहा है।

सरकार का दावा है कि असम मॉडल का यूसीसी धार्मिक रीति-रिवाजों में दखल नहीं देगा। इसमें मुख्य रूप से विवाह की न्यूनतम आयु, बहुविवाह पर रोक, महिलाओं के उत्तराधिकार अधिकार और लिव-इन संबंधों के पंजीकरण जैसे प्रावधान शामिल किए गए हैं। साथ ही पहाड़ी और मैदानी दोनों क्षेत्रों की जनजातीय समुदायों को इसके दायरे से बाहर रखा गया है। यह कदम स्पष्ट रूप से असम की जटिल **शेष पृष्ठ 3 पर**

मंत्रिमंडल में दिखा सामाजिक संतुलन

असम में मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की अगुवाई वाली एनडीए सरकार ने नए मंत्रियों को विभाग सौंपकर साफ संकेत दिया है कि आगामी राजनीतिक दौर में सामाजिक और क्षेत्रीय संतुलन उसकी सबसे बड़ी रणनीति रहने वाली है। चाय जनजाति, असम आंदोलन, महिला नेतृत्व और बोडोलैंड **शेष पृष्ठ 7 पर**

मणिपुर : बंधक बने लोग, टूटती आस

जन जन विचार
...✍ इंफाल

मणिपुर में शांति बहाली की तमाम कोशिशों के बीच एक बार फिर हालात भयावह मोड़ लेते दिखाई दे रहे हैं। राज्य सरकार द्वारा यह स्वीकार करना कि 38 से अधिक लोग अलग-अलग इलाकों में बंधक बनाए गए हैं, केवल एक सुरक्षा संकट नहीं, बल्कि प्रशासनिक और सामाजिक विफलता का गंभीर संकेत है।

के. गोविंदास कोन्थोजम ने कहा है कि सरकार नागरिक समाज संगठनों और राजनीतिक नेताओं के साथ बातचीत कर रही है, लेकिन सवाल यह है कि आखिर मणिपुर कब तक बातचीत और बंदूकों के बीच झूलता रहेगा? पिछले एक वर्ष से अधिक समय से राज्य हिंसा, अविश्वास और जातीय टकराव की आग में जल रहा है, लेकिन स्थायी समाधान अब भी दूर दिखाई देता है।

कांगपोकपी में चर्च नेताओं की हत्या, नागरिकों के अपहरण और लगातार हो रहे हमले इस बात का संकेत हैं कि राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति बेहद चिंताजनक हो चुकी है। सबसे **शेष पृष्ठ 7 पर**

सियासी संग्राम : 25 को फिर हाजिरी लगाएंगे पवन खेड़ा

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम की राजनीति में कांग्रेस और भाजपा के बीच टकराव अब और तेज होता दिखाई दे रहा है। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा को असम पुलिस की क्राइम ब्रांच ने एक बार फिर 25 मई को पूछताछ के लिए तलब किया है। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की पत्नी रिनिकी भुइयां शर्मा से जुड़े मामलों में दो दिनों तक चली लंबी पूछताछ के बाद यह नया समन जारी हुआ है।

यह मामला केवल कानूनी जांच तक सीमित नहीं रह गया, बल्कि अब असम की राजनीति का बड़ा मुद्दा बन चुका है। पवन खेड़ा ने मुख्यमंत्री की पत्नी पर कथित तौर पर कई पासपोर्ट और विदेशों में संपत्ति रखने के आरोप लगाए थे। **शेष पृष्ठ 3 पर**

ग्यारह घंटे पूछताछ चाय के साथ पेड़ा

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पवन खेड़ा से असम पुलिस की क्राइम ब्रांच द्वारा करीब 11 घंटे तक पूछताछ की। कुछ मीडिया रिपोर्टों में दावा किया जा रहा है कि पुलिस ने इस दौरान कांग्रेस नेता को तीन-चार बार चाय दी। कहा जा रहा है कि चाय के साथ उन्हें 'पेड़ा' भी दिया गया। हालांकि खेड़ा ने पेड़ा खाया या नहीं, यह रहस्य बना हुआ है।

अंदर पढ़ें

3 ☞ खून पीती महानगर की सड़कें
4 ☞ सनातन का सूर्योदय
5 ☞ ड्रैगन और ईगल की दोस्ती या मजबूरी ?
7 ☞ भारत को मिल गया अगला सुपरस्टार

पेट की आग में उतर जाते हैं कपड़े

जन जन विचार

...✍ सिलचर से लौटर परदेशी बीमार की रिपोर्ट

“पेट की आग जब ताप देती है, तो जिस्म के कपड़े अपने आप उतर जाते हैं। जिस्म की कीमत रोटी से भी सस्ती है मेरे बाबू। यह कहना था एक 15 वर्ष की रेहाना बेगम (काल्पनिक नाम) जो मजबूरन शरीर बेचती है। उसकी तरह कई अन्य लड़कियों को हर दिन और हर रात न जाने कितने मर्दों के साथ हमबिस्तर होना पड़ता है। गिनती करना मुश्किल हो जाती है। पूर्वोत्तर का एकमात्र सिलचर का वैश्यालय जिसे 14 नंबल गली भी कहा जाता है। 14 नंबर गली राधामाधव रोड पनपटी और सदर थाने से कुछ ही दूरी पर स्थित है। यहां 24 घंटे जिस्म के सौदागर जिस्म लूटते हैं और पैसों के लिए लड़कियां जिस्म लुटाती हैं।

यहां बताना जरूरी है कि यह वैश्यालय सिलचर म्युनिसिपल बोर्ड की जमीन पर है, लेकिन इसका कोई मालिक नहीं है, जो बोल सके कि यह रेड लाइट एरिया उसकी है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि वैश्यालय में जिस्म का धंधा करने वाली महिलाएं, युवतियां और लड़कियां बाहर नहीं जा सकती क्योंकि इन्हें अपनाने वाला कोई नहीं है।

यह वैश्यालय ब्रिटिश के शासन काल के समय से चला आ रहा है। उस समय चाय बागान के मालिकों को यहां की लड़कियां जिस्म सौंपती थी। इसके अलावा युद्ध के दरम्यान अंग्रेज सैनिकों को खूबसूरत युवतियां सौंपी जाती थी। जिस्म बेचने वाली एक युवती का कहना था कि मैं यहां के लोगों से यह सब सुनी हूं जिस्म के इस मैदान में कोई अपने आप नहीं आता बल्कि जबरन धकेला जाता है।

14 नवंबर गली के इस वैश्यालय में जिस्म का व्यापार करने वाली महिलाएं, युवतियां और नाबालिग लड़कियों की संख्या एक हजार से डेढ़ हजार के बीच है। यहां कई कमरे हैं। कमरे में दो अलग-अलग बेड लगे हुए हैं और बीच में एक लंबा पर्दा लगा हुआ है जो दीवार का काम करता है। पर्दे के इधर और उधर जिस्म का मजा लेने वाले ग्राहक अपनी मनपसंद लड़कियों को लेकर जिस्म का मजा लेते हैं।

पेट की आग बुझाने और रुपए कमाने के लि 13 और 14 वर्ष की लड़कियां शरीर का सौदा करती हैं, इसमें कई ऐसी लड़कियां भी हैं जिसके माता-पिता इस धंधे में शामिल हैं। कम रोशनी में देर रात तक जिस्म का खेल चलता है। रात में जिस्म का सौदा करने वाली दिन में आराम करती है और दिन में ग्राहकों को मजा देने वाली हुस्न की अदाएं रात को आराम करती करती है।

सदर थाने से कुछ ही दूरी पर इस वैश्यालय के बारे में कहा गया है कि अंग्रेजों के समय से यहां अनैतिक धंधा चल रहा था। अंग्रेज भारत छोड़ने के बाद भी वैश्यालाय जस का तस है। गली के अंदर दोनों तरफ मकान और दुकान है।

वैश्यालाय के ग्राहकों का आना लगा रहता है। वहीं कुछ दलाल भी है जो ग्राहकों को बाहर से लेकर आते हैं और बदले में कमीशन लेकर दूसरे ग्राहकों को लाने चले जाते हैं। ग्राहकों में सेना, सुरक्षा बलों के जवान, रिक्शा चालक के अलावा कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्र भी होते हैं। जिस्म के इस बाजार में अधिकांश लड़कियां नाबालिग होती हैं, जो सीमा से सटे बांग्लादेश की होती हैं। इसके अलावा नेपाल, भूटान और ग्रामीण इलाकों की लड़कियां होती हैं। अधिकांश लड़कियों को मानव तस्कर गिरोह के माध्यम से यहां लाकर बेचा गया है। बताते चले कि यहां तस्कर गिरोह लड़कियों की खरीद-फरोख्त करते हैं। एक लाख से लेकर तीन लाख रुपए तक की रकम लेकर लड़कियां वैश्यालय में बेची जाती हैं। खरीदी गई लड़कियों को पहले पहले प्यार से समझाया जाता है अगर मान गई तो ठीक नहीं तो उसके ऊपर अत्याचार किए जाते हैं। धंधा कराने वाले लोग पहले उस लड़की के साथ जबरन शारीरिक संबंध बनाते हैं फिर ग्राहकों को लुटने के लिए सौंपा जाता है। एक कॉल गर्ल ने बताया कि यहां जो आप देख रहे हैं यह नरक है। 10 बाई 4 के कमरे में लगे बेड पर ग्राहकों को देह पड़ोसती हूं एक रात में उससे दस से पंद्रह ग्राहकों को निपटारा करना पड़ता है। कभी कभार इनकी संख्या बढ़ भी जाती है। उसने अपनी रामकहानी कुछ इस प्रकार बताई।

इस नरक में कोई जान बुझकर नहीं आता मजबूरन पेट की भूख मिटाने के लिए आना पड़ता है। मैं रोजी-रोटी की तलाश में इधर-उधर भटक रही थी। एक मकान मालकिन को घर में नौकरानी की जरूरत थी। मैंने हां कर दी। कुछ दिन तक तो ठीक ठाक चल रहा था। एक दिन मालकिन कहीं गई हुई थी। मालिक ने मुझे पास बुलाकर प्यार भरी बातें की और जबरन मेरे साथ शारीरिक संबंध बनाया। यह काम आए दिन करने लगा और कुछ रुपए दे देता था। आए दिन इस घिनौनी कार्य से मैं परेशान हो गई और एक दिन मैं भाग निकली। मेरा भागना मेरे लिए आफत था। एक महिला के चक्कर में पड़ गई। उस महिला ने मुझे यहां लाकर मोटी रकम लेकर बेच दिया और तभी से इस कीचड़ में पड़ी हूं।

14 नंबर गली (वैश्यालय) को हटाने के लिए सिलचर के कई संगठन सालों से लगे हुए हैं। लगातार इसकी मांगों को देखते हुए प्रदेश की सरकार 2012 में वैश्यालय को खाली कराने और यौन कर्मियों को पुनर्वास पर विचार-विमर्श की थी। इसके लिए संबंधित विभागों को निर्देश भी दिए लेकिन कई साल बीत जाने के बाद भी सरकारी फाइलें कहां गुम हो गई। इसे किसी को मालूम नहीं।

साप्ताहिक राशिफल

15 से 21 मई 2026।। विक्रम संवत 2083-**मास** : ज्येष्ठ, **पक्ष** : कृष्ण, **तिथि** : त्रयोदशी

मेष — **इस** सप्ताह कामकाज में तेजी रहेगी। नई जिम्मेदारियाँ मिल सकती हैं। धन लाभ के योग बन रहे हैं, लेकिन खर्च भी बढ़ सकता है। रिश्तों में धैर्य रखें।

वृषभ — **करियर** में स्थिरता और सम्मान मिलेगा। परिवार का सहयोग मिलेगा। निवेश सोच-समझकर करें। स्वास्थ्य में सुधार रहेगा, पर आलस्य से बचें।

मिथुन — **मिथुन**
यह सप्ताह संचार और करियर के लिए अच्छा रहेगा। नौकरी या बिजनेस में नई संभावना बन सकती है। रुका हुआ पैसा मिलने के संकेत हैं।

कर्क — **भावनात्मक** उतार-चढ़ाव रह सकते हैं। खर्चों पर नियंत्रण जरूरी है। परिवार से जुड़ी जिम्मेदारियाँ बढ़ेंगी। किसी पुराने मित्र से मुलाकात संभव है।

सिंह — **आत्मविश्वास** बढ़ेगा और करियर में प्रगति दिखेगी। अटका हुआ काम पूरा हो सकता है। गुस्से और अहंकार से बचें। यात्रा के योग बन रहे हैं।

कन्या — **यह** सप्ताह प्रोफेशनल सफलता दिला सकता है। नई आय के स्रोत बन सकते हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। रिश्तों में संतुलन बनाए रखें।

तुला — **घर** और परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। आर्थिक लाभ के योग हैं। धार्मिक या आध्यात्मिक गतिविधियों में रुचि बढ़ सकती है।

वृश्चिक — **काम** का दबाव बढ़ सकता है, लेकिन मेहनत रंग लाएगी। प्रतियोगिता में सफलता मिल सकती है। स्वास्थ्य और नींद पर ध्यान दें।

धनु — **भाग्य** का साथ मिलेगा। करियर और व्यापार में विस्तार के योग हैं। यात्रा लाभदायक हो सकती है। प्रेम जीवन में सकारात्मक बदलाव आएंगे।

मकर — **नौकरी** में पदोन्नति या नई जिम्मेदारी मिल सकती है। वरिष्ठों का सहयोग मिलेगा। वाहन सावधानी से चलाएँ।

कुंभ — **समाज** में मान-सम्मान बढ़ेगा। कोई अच्छी खबर मिल सकती है। मित्रों का सहयोग मिलेगा। नई योजनाओं पर काम शुरू हो सकता है। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

मीन — **मन** थोड़ा संवेदनशील रह सकता है। नौकरी में तनाव या दबाव महसूस हो सकता है, लेकिन धैर्य रखने से स्थिति सुधरेगी।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

16 मई : शनिवार : श्राद्ध अमावस्या
17 मई : रविवार : मलमास आरंभ
20 मई : बुधवार : वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत

●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

पृष्ठ 1 का शेषांश...

अब और नहीं

थी। यदि किसी अन्य धर्म के खिलाफ ऐसा बयान दिया गया होता, तो देशभर में तूफान खड़ा हो जाता। टीवी डिबेट से लेकर अंतर्राष्ट्रीय मंच तक ‘घृणा’ और ‘असहिष्णुता’ का शोर मचता। लेकिन सनातन को खत्म करने की बात पर कई बड़े नेता चुप हैं।

सनातन कोई राजनीतिक संगठन नहीं, जिसे चुनावी रणनीति के तहत खत्म करने की बात की जाए। सनातन वह चेतना है जिसने इस देश को हजारों वर्षों तक जोड़े रखा। यही परंपरा भारत को राम, कृष्ण, शिवाजी, गुरु गोविंद सिंह और स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुष देती है। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि हिंदुओं की सहिष्णुता को लगातार उनकी कमजोरी समझी जा रहा है।

अब हिंदू समाज को यह समझना होगा कि केवल सोशल मीडिया पर नाराजगी दिखाने से कुछ नहीं बदलेगा। लोकतंत्र में सबसे बड़ा हथियार वोट होता है। जो सनातन का सम्मान करे, हिंदुओं की आस्था की रक्षा करे और भारत की सांस्कृतिक पहचान के साथ खड़ा हो-समर्थन उसी को मिलना चाहिए, चाहे वह किसी भी दल में क्यों न हो।

बंगाल, कश्मीर और केरल जैसे उदाहरण हिंदुओं को चेतावनी देते हैं कि यदि समाज संगठित और जागरूक नहीं रहेगा, तो उसकी आवाज धीरे-धीरे कमजोर कर दी जाएगी। इतिहास गवाह है कि जो समाज अपनी संस्कृति और धर्म की रक्षा के लिए खड़ा नहीं होता, उसका अस्तित्व भी संकट में पड़ जाता है।

यह समय केवल गुस्सा दिखाने का नहीं, जागने का है। हिंदुओं को जाति, भाषा और क्षेत्र से ऊपर उठकर अपनी अस्मिता के लिए एकजुट होना होगा। क्योंकि अगर सनातन सुरक्षित रहेगा, तभी भारत की आत्मा सुरक्षित रहेगी।

खून पीती महानगर की सड़कें

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

वर्ष	कुल हादसे	कुल मौतें
2015	6559	2397
2016	7435	2572
2017	7170	2783
2018	8284	2966
2019	8350	3208
2020	6595	2829
2021	7411	3036
2022	7023	2997
2023	7262	3151
2024	12572	2760
10 वर्ष	**79,061**	**28,699**

असम की सड़कों को न जाने किसकी बुरी नजर लग गई है, बस खून पीने लगी हैं। रोजाना सड़क दुर्घटनाओं का सिलसिला जारी है और ऐसा कोई दिन न बचा हो जहां सड़क हादसे नहीं होते हों। इन सड़क दुर्घटनाओं में लगातार हो रही मौतों ने सरकार और प्रशासन को हिला के रख दिया है।

हाल ही के दिनों में महानगर समेत पूरे प्रदेश में गंभीर सड़क दुर्घटनाएं घटी हैं। सड़क हादसों में सबसे अधिक गुवाहाटी, नगांव, उत्तर लखीमपुर, शोणितपुर, कामरुप (मेट्रो), कामरुप (ग्रामीण), होजाई, धेमाजी, कछार, काजीरंगा और धुबड़ी आदि जिलों में दुर्घटनाएं कुछ अधिक हो रही है। 26 अप्रैल, 2026 को गुवाहाटी शहर के मठघरिया में तेज रफ्तार से आ रही एक कार सड़क के किनारे खड़े ट्रक से टकरा गई। इस भयंकर हादसे में तीन युवतियां मारी गईं। कार चालक बच निकला और रफू चक्कर हो गया। बाद में उसे डिब्रूगढ़ से गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ इसी प्रकार गोलाघाट जिले में 25 अप्रैल को राष्ट्रीय राजमार्ग पर ट्रक और मोटरसाइकिल की भिड़ंत में तीन लोगों की जान चली गई। वहीं गुवाहाटी महानगर के उलुबाड़ी के निकट बी बरुवा कालेज के सामने सड़क पार कर रही सीता देवी नाम की महिला को एक वाहन ने ठोकर मार दी। महिला की मौत गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में हो गई। दुर्घटना के बाद फरार चालक को पुलिस ने 30 अप्रैल को पकड़ लिया। कामरुप (ग्रामीण) के कमलपुर में पिछले सप्ताह एक दुर्घटना में दो लोगों की मौत हो गई।

यातायात पुलिस के एक आला अधिकारी बताते हैं कि ठंडी के मौसम में सड़क हादसे होना लाजिमी है, लेकिन गर्मी के मौसम में सड़क हादसे हो रहे हैं यह ठीक नहीं है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में होने वाली अधिकांश सड़क दुर्घटनाओं के पीछे तेज रफ्तार, लापरवाही और यातायात नियमों का पालन नहीं करना है।

अधिकारी ने बताया कि सड़क दुर्घटनाओं के पांच प्रमुख कारण हैं। नशे में वाहन चलाना, लापरवाही, ध्यान भटकाकर तेज रफ्तार से वाहन चलाना है। इन्हीं सब कारणों से सड़क हादसे हो रहे हैं।

सड़क हादसों के कुछ आंकड़ों के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में उन्होंने बताया कि चालू साल के जनवरी महीने से लेकर मार्च महीने तक 4219 सड़क दुर्घटनाएं हुई हैं और 1,008 लोगों की मौत हो चुकी है। कोहरे और कम दृष्यता के कारण 2020 से लेकर 2024 तक 2476 लोगों की मौत हो चुकी है। 2015 से लेकर 2024 तक दस वर्षों में प्रदेश में कुल 7061 सड़क हादसे हुए जिसमें कुल 2868 लोगों की मौत हो गई। दुर्घटनाओं में सबसे घातक 2019 और 2023 वर्ष को माना गया है। इस दरम्यान 3208 और 3151 लोगों की जानें गई है। सड़क दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है, इसके लिए यातायात पुलिस के नियमों का पालन करने होंगे तभी जाकर सड़क हादसे रुक सकती है।

नहीं रहे हाथी हमारे साथी

''चल-चल-चल मेरे साथी ओ मेरे हाथी चल ले चल खटारा खींच के, चल यार धक्का मार बंद है मोटरकार...'' साल 1971 में यह सदाबहार फिल्म 'हाथी मेरे साथी' दर्शकों के लिए रिलीज किया गया था। मशहूर और लोकप्रिय गाने को किशोर कुमार ने गाया था, जिसे राजेश खन्ना और तनूजा पर फिल्माया गया था। फिल्म में हाथी और इंसान की बेमीशाल दोस्ती दिखाई गई थी लेकिन हकीकत में इंसान और हाथी के बीच लंबे समय से चले आ रहे संघर्ष के संबंध में जन-जन विचार की ओर से पेश है **परदेशी बीमार** की रिपोर्ट।

असम में जंगली हाथी और इंसानों के बीच संघर्ष की कोई नई घटनाएं नहीं है। हर वर्ष औसतन 70 से अधिक इंसान और 80 से अधिक हाथियों के मारे जाने की खबर है। 2019 से लेकर 2025 के बीच 502 इंसानों को हाथियों ने जाने ली है।

पिछले दो दशकों में मानव और हाथियों के संघर्ष के आंकड़े चिंताजनक है। मानव और हाथियों के बीच संघर्ष के कई कारण भी बताए गए हैं। इन्हीं में से एक कारण यह है कि प्रदेश से चाय उत्पादकों के द्वारा जंगलों के अतिक्रमण करना शामिल है। इसके अलावा जंगलों की कटाई कर के इंसानों द्वारा मकान बनाना शामिल है। जंगलों में रहने वाले हाथी जंगलों की कटाई से वे सब इंसानों की बारी में आ जाते हैं और अशांति फैलाता हैं।

वन विभाग के हवाले से मिली खबर के मुताबिक हाथी पहले से कही अधिक हिंसक हो गए हैं, क्योंकि उनके रहने की जगह कम होती गई। पारंपरिक गलियारों में दिन प्रतिदिन कब्जा होता जा रहा है। ऐसे में हाथियों का झुंड गांव में प्रवेश करते हैं और जान-माल की हानि पहुंचाते हैं।

उधर उदालगुड़ी जिले का वन अधिकारी का कहना है कि यह क्षेत्र पहले जंगल हुआ करता था पहले गांव और आरक्षित वन क्षेत्रों के बीच बजट हुआ करता था, जहां हाथियों का निवास स्थान था। हाथियों के लिए भोजन और पानी की कमी नहीं थी। लेकिन जनसंख्या बढ़ने के साथ इन इलाकों में चाय के बागान शुरु होते गए जो अब हमारे नियंत्रण में नहीं है। वन अधिकारी के अनुसार अतिक्रमण अब आरक्षित वनों के साथ सटे सीमा क्षेत्र तक पहुंच गए हैं, जो वन विभाग के नियंत्रण में आता है। हाथी चाय की पत्तियां नहीं खाते इसलिए वे अब गांव में घुस रहे हैं और ऐसे में इंसान और हाथियों के बीच अक्सर संर्घष देखने को मिल रहे हैं।

एक अन्य अधिकारी का कहना था कि जंगल के इलाके में छोटे स्तर के चाय की खेती कर रहे हैं अब तक 23 जिलों के 56 हजार लघु चाय उत्पादक इन जंगलों में है अन्य लोगों का जंगलों की कटाई कर मकान बनाकर रहने के अलावा 30 से 40 प्रतिशत लघु चाय कंपनियों का इस जंगलों में कब्जा है।

इंसान और हाथियों के संघर्ष के आंकड़े इस बात के गवाह है कि हाथी अब इंसानों के साथी नहीं रहे। आंकड़ों के अनुसार पिछले 23 वर्षों में 1468 लोगों की जानें हाथियों ने ली है वहीं इस दरम्यान 1209 हाथियों की मौत हो चुकी है। इन मौतों में 626 हाथियों की मौत मावनीय गतिविधियों के कारण हुई। इसमें सबसे बड़ा कारण करंट लगना और ट्रेन की चपेट में आना जाना शामिल है। पिछले 23 सालों में 1209 हाथियों की मौत हो चुकी है जिसमें हाथियों को जहर देकर और शिकारी द्वारा शिकार करना शामिल है।

दूसरी ओर शोणितपुर, ग्वालपाड़ा और उदालगुड़ी जिले में मानव और हाथी के बीच संघर्ष की घटनाएं कुछ अधिक है। हाल के कुछ वर्षों में यानि 2019 से लेकर 2024-25 में हाथियों के हमले में 502 लोगों की मौत हो चुक है।

लोगों का कहना था कि सदियों से हाथी और इंसान का अस्तित्व का मिशाल बना हुआ था, जहां हाथी को न केवल जंगल का रक्षक बल्कि हमारी संस्कृति में भगवान गणेश का रूप मानकर पूजा जाता है लेकिन आज विकास की आंधी का दौड़ और सिमटते जंगलों ने इस रिश्ते में कड़वाहट घोल दी है, जो गलियारे हाथियों के घर से वहां इंसानों की बस्तियां और रेलवे लाइन की पटरियां देखी जा सकती है। नतीजा वही संघर्ष जिसमें जान-माल दोनों को नुकसान हो रहा है। घने जंगलों से निकल हाथियों का झुंड खेतों और बस्तियों की ओर कदम रखते हैं तब वे हाथी अपनी छिपी हुई निवास की तलाश करते हैं।

हाथी और इंसानों के बीच हो रहे संघर्ष अब राष्ट्रीय समस्या बनकर उभरी है और पर्यावरण संकट की चेतावनी भी है। ऐसे में सरकार को चाहिए कि कब्जा किए गए जंगलों को मुक्त करवाए तभी जाकर इंसान और हाथियों के बीच हो रहे संघर्ष को रोका जा सकता है। अन्यथा वही राग अपनाने होंगे ''नहीं रहे हाथी हमारे साथी।''

पृष्ठ 1 का शेषांश...

सियासी संग्राम : 25 25 को फिर...

इसके बाद असम पुलिस ने उनके खिलाफ धोखाधड़ी, जालसाजी, मानहानि और चुनाव से जुड़े झूठे बयान जैसे गंभीर आरोपों में केस दर्ज किया। दूसरी ओर भाजपा का दावा है कि केंद्र सरकार ने लिखित रूप से इन दस्तावेजों को 'फर्जी' बताया है।

पूरे घटनाक्रम में सबसे दिलचस्प बात यह है कि मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच चुका है। अदालत ने खेड़ा को अग्रिम जमानत देते हुए जांच में सहयोग करने का निर्देश दिया, वहीं कांग्रेस इसे राजनीतिक प्रतिशोध की कार्रवाई बता रही है। कांग्रेस का कहना है कि विपक्ष की आवाज दबाने के लिए एजेंसियों का इस्तेमाल किया जा रहा है, जबकि भाजपा इसे कानून के तहत सामान्य कार्रवाई बता रही है।

जनता के बीच अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या राजनीतिक आरोपों का फैसला अदालतों और पुलिस थानों में होगा या सार्वजनिक बहस में? लोकतंत्र में सवाल पूछना विपक्ष का अधिकार है, लेकिन आरोपों की सत्यता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

पहली बैठक में ही यूसीसी मसौदा...

सामाजिक संरचना और आदिवासी संवेदनशीलता को ध्यान में रखकर उठाया गया प्रतीत होता है।

लेकिन राजनीतिक दृष्टि से देखें तो यह केवल कानूनी सुधार नहीं, बल्कि भाजपा के लंबे वैचारिक एजेंडे का हिस्सा भी है। उत्तराखंड और गुजरात के बाद अब असम में यूसीसी को आगे बढ़ाना भाजपा के उस संदेश को मजबूत करता है कि वह 'एक राष्ट्र, एक कानून' की दिशा में बढ़ रही है।

हालांकि विपक्ष और अल्पसंख्यक संगठनों के बीच आशंकाएं भी कम नहीं हैं। सवाल उठ रहे हैं कि क्या भविष्य में इस कानून का दायरा बढ़ेगा? क्या सामाजिक सहमति पर्याप्त है? और क्या इससे राज्य में नई राजनीतिक ध्रुवीकरण की स्थिति बनेगी?

जनता की नजर अब इस बात पर है कि सरकार इस मुद्दे को सामाजिक सुधार के रूप में प्रस्तुत कर पाती है या यह केवल चुनावी और वैचारिक राजनीति का नया हथियार बनकर रह जाएगा। असम जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक राज्य में यूसीसी की राह आसान नहीं होगी, लेकिन यह तय है कि इस कदम ने राज्य की राजनीति में एक नई बहस को जन्म दे दिया है।

संपादकीय

शिक्षा का संकट

देश की शिक्षा व्यवस्था आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां सबसे बड़ा संकट केवल पाठ्यक्रम या भाषा का नहीं, बल्कि भरोसे का है। वर्षों से सरकारें शिक्षा में सुधार, पारदर्शिता और नई नीतियों की बात करती रही हैं, लेकिन जमीनी सच्चाई यह है कि मेहनत करने वाला छात्र आज खुद को सबसे अधिक असुरक्षित महसूस कर रहा है।

नई शिक्षा नीति, भारतीय ज्ञान परंपरा और नालंदा-तक्षशिला के गौरव का उल्लेख सुनने में अच्छा लगता है, लेकिन जब नीट जैसी परीक्षाओं में पेपर लीक की खबरें सामने आती हैं तो करोड़ों युवाओं का विश्वास हिल जाता है। छात्र अब किताबों से ज्यादा इस डर से लड़ रहा है कि कहीं उसकी मेहनत किसी माफिया, दलाल या भ्रष्ट नेटवर्क के आगे हार न जाए।

सबसे दुखद बात यह है कि शिक्षा अब ज्ञान का क्षेत्र कम और कारोबार का मैदान ज्यादा बनती जा रही है। कोचिंग उद्योग, पेपर लीक गिरोह और अंदरूनी सांठगांठ ने पूरी व्यवस्था को खोखला कर दिया है। हर परीक्षा के बाद अभिभावकों और छात्रों के मन में पहला सवाल यही उठता है-क्या परीक्षा निष्पक्ष हुई भी है?

सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती अब केवल नई योजनाएं लाना नहीं, बल्कि युवाओं का टूटा भरोसा वापस जीतना है। इतिहास बदलने से ज्यादा जरूरी भविष्य बचाना है। यदि मेहनत करने वाले छात्र को न्याय नहीं मिलेगा, तो कोई भी वैचारिक सपना सफल नहीं हो सकता। शिक्षा किसी राष्ट्र की आत्मा होती है, और जब उसी पर माफिया हावी होने लगे, तो यह केवल व्यवस्था की नहीं, पूरे समाज की हार बन जाती है।

सुलगता सवाल ? आपके विचार

'मामा' ब्रांड और बदलती राजनीति

असम की राजनीति में मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा का 'मामा' रूप केवल लोकप्रिय संबोधन नहीं, बल्कि डिजिटल युग की नई राजनीतिक रणनीति का उदाहरण बन चुका है। कभी नेता जनता से दूरी बनाकर अपनी सत्ता का प्रभाव दिखाते थे, लेकिन अब राजनीति भावनात्मक जुड़ाव और सोशल मीडिया की निरंतर मौजूदगी से तय हो रही है।

व्हाट्सऐप, फेसबुक, इंस्टाग्राम और रील्स के दौर में डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने खुद को केवल प्रशासक नहीं, बल्कि 'परिवार के सदस्य' की तरह प्रस्तुत किया है। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में दौरा, देर रात निरीक्षण, बच्चों से बातचीत और सीधे जनता से संवाद-इन सभी तस्वीरों और वीडियो ने उनकी छवि को 'सुलभ नेता' में बदल दिया। यही वजह है कि आज असम में बड़ी संख्या में लोग उन्हें मुख्यमंत्री से ज्यादा 'मामा' कहकर पुकारते हैं।

लेकिन यह केवल भावनात्मक राजनीति नहीं है। इसके पीछे एक बेहद संगठित डिजिटल कम्युनिकेशन मॉडल काम कर रहा है, जहां प्रशासनिक फैसलों को भी सोशल मीडिया के जरिए तुरंत जनता तक पहुंचाया जाता है। इससे 'काम करने वाले नेता' की छवि और मजबूत होती है।

स्पष्ट है कि 'मामा' ब्रांड ने असम की राजनीति को नया रूप दिया है। यह दिखाता है कि आज की राजनीति में सत्ता केवल भाषणों से नहीं, बल्कि मोबाइल स्क्रीन पर लगातार दिखाई देने वाली उपस्थिति से भी मजबूत होती है।

सनातन का सूर्योदय

जन जन विचार
...✍ मृत्युंजय दीक्षित

पश्चिम बंगाल में 69 वर्षों के अथक संघर्ष के बाद भारतीय जनता पार्टी की पूर्ण बहुमत वाली प्रथम सरकार शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में कार्यभार ग्रहण करके काम पर लग गई है। बंगाल में भाजपा की विजय बहुत बड़ी व ऐतिहासिक है। बंगाल ही नहीं भारत के अन्य भागों में भी इस विजय का आनंद दिखाई वातावरण दे रहा है। इस विजय के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कर्नाटक, तेलंगना और गुजरात के दौरे में जो भीड़ उमड़ रही है उससे स्पष्ट रूप से जनसामान्य और भाजपा कायकर्ताओं के उत्साह का अनुमान लगाया जा सकता है। बंगाल विधानसभा चुनावों मे हिंदू समाज ने पहली बार बांग्लादेशी घुसपैठ और मुस्लिम तुष्टिकरण की विकृत राजनीति के विरुद्ध एकजुट होकर मतदान किया और जिसका परिणाम आज पूरा भारत देख रहा है।

बंगाल की जिस धरती पर 75 वर्ष पूर्व डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जनसंघ की वैचारिक नींव रखी थी उसी बंगाल में पहली बार भाजपा 27 सीटों के साथ सत्ता के शिखर पर पंहुची और भगवा वस्त्रों में शुभेंदु अधिकारी ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। बंगाल की कैबिनेट में अभी पांच मंत्रियों को ही शपथ दिलाई गई है, जिसमें बंगाल में भाजपा का संगठन खड़ा करने में अहम भूमिका निभाने वाले दिलीप घोष, फैशन डिजाइनर से बंगाल भाजपा की सबसे मुखर नेत्री बनी अग्निमित्रा पॉल जिन्होंने तृणमूल के खिलाफ आक्रामक मोर्चा संभाला, बांग्लादेश के हिंदू शरणार्थी मतुआ समुदाय के प्रमुख चेहरे अशोक कीर्तनिया जो उत्तर 24 परगना जिले के भारत-बांग्लादेश सीमा से सटे इलाको में भाजपा के जमीनी संगठनकर्ता के रूप मे अत्यंत सक्रिय रहे हैं, छात्र राजनीति से उभरे नेता निशीथ प्रामाणिक जो 2019 में भाजपा से जुड़े और जंगल महल के आदिवासी समुदाय के बड़े नेता खुदीराम टुडू शामिल हैं। अभी इस मंत्रिमंडल है का विस्तार होना बाकी है। बंगाल में शपथ ग्रहण समारोह के मंच पर एक भारत श्रेष्ठ भारत की संकल्पना के अनुरूप लघु भारत के भव्य दर्शन हो रहे थे तथा भविष्य की राजनीति के संकेत भी मिल रहे थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से आज तक बंगाल में कांग्रेस, वामपंथ और तृणमूल की सरकारें रहीं जो तुष्टिकरण में आकंठ डूबी रहीं और हिंदुओ को दोयम दर्जे का नागरिक बना दिया। स्थितियां इतनी विकट हो गई थीं कि बंगाल की धरती पर जय श्रीराम बोलने पर नफरत का कहर टूट पड़ता था। आज उसी बंगाल में जब जयश्रीराम के नारे गूंज रहे हैं तो बंगाल का हर सनातनी खुशी से सराबोर हो रहा है। बंगाल में भाजपा सरकार आने से पश्चिम बंगाल के हिंदुओं को तुष्टिकरण की दमनकारी नीतियों और भय के माहौल से आजादी मिली है। यह विजय केवल सत्ता का परिवर्तन नही अपितु बंगाल के पुनरुत्थान का शंखनाद है। अब बंगाल सही मायने में सोनार बांग्ला बनने की ओर अग्रसर होगा। भाजपा नेताओं का कहना है कि मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में पश्चिम बंगाल सांस्कृतिक, आध्यात्मिक व आर्थिक उत्थान के नए दौर मे प्रवेश करेगा।

हार की कुंठा से ग्रसित तृणमूल व विरोधी दलों के नेता अभी भी एसआईआर, चुनाव आयोग और केंद्रीय सुरक्षाबलों वाले आरोप दोहरा रहे हैं जबकि वास्तविकता यह है कि भाजपा ने यह चुनाव लम्बे संघर्ष और अपने कार्यकर्ताओं के बलिदान के बाद जीता है। तृणमूल के राज में वर्ष 2011 से 2025 के बीच भाजपा के 321 कार्यकर्ता मारे गए, उनके विरुद्ध हुई हिंसा में हजारों घर उजाड़ दिए गए, भाजपा व संघ के किसी कार्यकर्ता को बम से उड़ाया गया किसी को पेड़ से लटकाया गया। 2021 में तो भाजपा कार्यकर्ताओं के प्रति तृणमूल के लोगों ने क्रूरता की सभी सीमाएं लांघ दी थीं। नंदीग्राम से लेकर वीरभूम तक, कूच बिहार हो या वशीर हाट चुनाव के बाद बदले के नाम पर पूरे-पूरे गांव खाली करवा दिए गए थे। 2021 की चुनावी हिंसा में हाईकोर्ट ने सीबीआई जांच के आदेश दिए किंतु ममता सरकार उन सभी में अड़ंगा डालती रही। आज संदेशखाली से आर जी कर कांड तक सभी पीड़ित परिवारों के मन में एक नया सबेरा आया है कि अब न्याय होकर रहेगा। बंगाल के हिंदू जनमानस को नई सरकार पर भरोसा है इसलिए नई सरकार को भी अत्यंत तत्परता और सतर्कता के साथ संकल्प पत्र को पूरा करना होगा। नई सरकार ने अपनी पहली कैबिनेट की पहली बैठक में जो निर्णय लिए हैं उनसे उसकी गंभीरता तथा बंगाल की जनता के प्रति प्रतिबद्धता का पता चलता है।

नई सरकार के पहले फैसले- शुभेंदु मंत्रिपरिषद ने अपनी पहली बैठक में ही कई बड़े निर्णय लिए हैं। जिनमें आयुष्मान भारत योजना को बंगाल में लागू करना, भारतीय न्याय सहिंता के तीन कानूनों को लागू करना, बीएसएफ को सीमावर्ती क्षेत्रों में 45 दिनों के अन्दर जमीन स्थानांतरित करना शामिल है। ममता बनर्जी की सरकार इन सभी कार्यों में लगातार अड़ंगा ही डालती रही थी।

ड्रैगन और ईगल की दोस्ती या मजबूरी?

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

दुनिया की दो सबसे बड़ी महाशक्तियों अमेरिका और चीन के बीच बीजिंग में हुई शिखर वार्ता ने यह साफ कर दिया है कि टकराव की राजनीति अब दोनों देशों को भारी पड़ने लगी है। कभी एक-दूसरे पर टैरिफ और प्रतिबंधों की बरसात करने वाले डोनाल्ड ट्रंप और शी जिनपिंग आज 'दोस्ती', 'साझेदारी' और 'स्थिर रिश्तों' की भाषा बोल रहे हैं। यह सिर्फ कूटनीतिक शिष्टाचार नहीं, बल्कि बदलती वैश्विक मजबूरियों का संकेत है।

शी जिनपिंग का यह कहना कि 'ट्रेड वॉर में कोई विजेता नहीं होता' सीधे तौर पर पिछले वर्षों की आर्थिक लड़ाइयों की विफलता की स्वीकारोक्ति है। दूसरी तरफ ट्रंप का यह बयान कि 'आपका दोस्त होना सम्मान की बात है' बताता है कि अमेरिका भी अब चीन को सिर्फ प्रतिद्वंद्वी मानकर आगे नहीं बढ़ सकता।

असल में यूक्रेन संकट, ईरान युद्ध, एआई और सेमीकंडक्टर की होड़, ताइवान विवाद और वैश्विक मंदी के खतरे ने दोनों देशों को एहसास करा दिया है कि अगर अमेरिका और चीन आमने-सामने खड़े रहे, तो पूरी दुनिया आर्थिक और सामरिक अस्थिरता में फंस जाएगी। यही कारण है कि 9 लाख करोड़ रुपए की संभावित बोइंग डील, अमेरिकी बीफ आयात की मंजूरी और व्यापारिक रिश्तों को 'स्थिर' बनाने की कोशिशें अचानक तेज हो गई हैं।

लेकिन सवाल यह भी है कि क्या यह दोस्ती स्थायी होगी? ताइवान, रेयर अर्थ मिनरल्स और एआई टेक्नोलॉजी को लेकर दोनों देशों के हित अब भी टकरा रहे हैं। चीन ताइवान को अपना हिस्सा मानता है, जबकि अमेरिका वहां हथियार भेज रहा है। ऐसे में मुस्कुराहटों के पीछे अविश्वास अब भी जिंदा है।

फिर भी, इस मुलाकात ने दुनिया को एक संदेश जरूर दिया है-महाशक्तियां अब समझ रही हैं कि 21वीं सदी की लड़ाई केवल हथियारों से नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था, तकनीक और व्यापार से जीती जाएगी। दुनिया की नजर अब इस पर है कि बीजिंग की यह गर्मजोशी आने वाले वर्षों में शांति का रास्ता बनाएगी या केवल एक अस्थायी राजनीतिक तस्वीर बनकर रह जाएगी।

भालू भी बढ़ा रहा हाथ, बदल रही दुनिया की ताकतों की दिशा

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की चीन यात्रा के तुरंत बाद रूस द्वारा राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन के चीन दौरे का ऐलान वैश्विक राजनीति में बड़े बदलाव का संकेत माना जा रहा है। यह केवल एक कूटनीतिक यात्रा नहीं, बल्कि दुनिया की बदलती शक्ति-संतुलन की तस्वीर है।

रूस और चीन पिछले कुछ वर्षों में जिस तेजी से करीब आए हैं, उसने पश्चिमी देशों खासकर अमेरिका की चिंता बढ़ा दी है। यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी प्रतिबंधों से घिरे रूस के लिए चीन सबसे बड़ा आर्थिक सहारा बनकर उभरा है। वहीं चीन भी अमेरिका के बढ़ते दबाव और व्यापारिक टकराव के बीच रूस को अपने रणनीतिक साझेदार के रूप में और मजबूत करना चाहता है।

शी जिनपिंग और पुतिन की 'सीमाहीन साझेदारी' अब केवल बयान नहीं रही। ऊर्जा, रक्षा, एआई, सेमीकंडक्टर और वैश्विक व्यापार जैसे क्षेत्रों में दोनों देश अमेरिका-प्रधान विश्व व्यवस्था को चुनौती देने की कोशिश कर रहे हैं। ट्रंप जहां चीन के साथ रिश्तों को 'स्थिर' करने की बात कर रहे हैं, वहीं पुतिन का बीजिंग दौरा यह संदेश देता है कि रूस-चीन गठजोड़ अभी भी मजबूती से कायम है।

असल सवाल यह है कि क्या दुनिया अब नए 'कोल्ड वॉर' की ओर बढ़ रही है? एक तरफ अमेरिका अपने सहयोगियों के साथ वैश्विक प्रभाव बनाए रखना चाहता है, तो दूसरी ओर रूस और चीन बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की बात कर रहे हैं।

भारत जैसे देशों के लिए यह स्थिति बेहद संवेदनशील है। भारत के रूस और अमेरिका दोनों से रणनीतिक संबंध हैं, जबकि चीन के साथ सीमा विवाद भी जारी है। ऐसे में बदलती वैश्विक धुरी के बीच भारत को संतुलन की कूटनीति और अधिक सावधानी से निभानी होगी।

स्पष्ट है कि बीजिंग अब केवल चीन की राजधानी नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति संघर्ष का नया केंद्र बनता जा रहा है।

सोने के खेल पर 'सर्जिकल स्ट्राइक'

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

देश में लगातार बढ़ते गोल्ड इंपोर्ट और उसके जरिए होने वाले कथित खेल पर केंद्र सरकार ने अब बड़ा प्रहार किया है। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) द्वारा जारी नए नियमों ने साफ संकेत दे दिया है कि अब 'सोने के कारोबार' में मनमानी नहीं चलेगी। सरकार ने एडवांस ऑथोराइजेशन स्कीम के तहत सोने के आयात पर सख्त निगरानी लागू कर दी है।

सबसे बड़ा फैसला यह है कि अब कोई भी कंपनी 100 किलोग्राम से ज्यादा सोना आयात नहीं कर सकेगी। पहली नजर में यह केवल प्रशासनिक आदेश लग सकता है, लेकिन इसके पीछे सरकार की बड़ी रणनीति छिपी है। दरअसल, लंबे समय से यह आरोप लगते रहे हैं कि एक्सपोर्ट के नाम पर आयात की छूट लेकर कुछ कंपनियां नियमों का दुरुपयोग कर रही थीं। देश का गोल्ड इंपोर्ट बिल लगातार बढ़ रहा था और विदेशी मुद्रा पर दबाव भी बढ़ता जा रहा था।

अब सरकार ने साफ शब्दों में कह दिया है-पहले निर्यात करो, फिर अगला आयात पाओ। नई व्यवस्था के तहत दूसरी बार इंपोर्ट की अनुमति तभी मिलेगी, जब पिछली अनुमति के तहत तय एक्सपोर्ट ऑब्लिगेशन का कम से कम 50 प्रतिशत पूरा किया जा चुका हो। यानी अब सिर्फ कागजों पर कारोबार दिखाकर सोना मंगाने का रास्ता आसान नहीं रहेगा।

सरकार ने पहली बार आवेदन करने वालों के लिए भी शिकंजा कस दिया है। अब मैन्युफैक्चरिंग यूनिट का फिजिकल इंस्पेक्शन अनिवार्य होगा। संबंधित अधिकारी फैक्ट्री में जाकर देखेंगे कि यूनिट वास्तव में चल रही है या केवल कागजी कंपनी है। यह कदम उन फर्जी कंपनियों पर सीधा प्रहार माना जा रहा है, जो सिर्फ लाइसेंस लेकर कारोबार का दिखावा करती थीं।

इतना ही नहीं, अब हर 15 दिन में चार्टर्ड अकाउंटेंट से प्रमाणित रिपोर्ट जमा करनी होगी। इसमें यह बताना होगा कि कितना सोना आयात हुआ और कितना निर्यात किया गया। संबंधित क्षेत्रीय प्राधिकरण हर महीने इसकी रिपोर्ट डीजीएफटी मुख्यालय को भेजेंगे।

सरकार का यह कदम केवल व्यापारिक नियम नहीं, बल्कि आर्थिक अनुशासन का संदेश भी है। जब देश आत्मनिर्भरता और विदेशी मुद्रा बचाने की बात कर रहा है, तब सोने के अनियंत्रित आयात पर लगाम जरूरी थी।

यदि इन नियमों को ईमानदारी से लागू किया गया तो सोने के आयात के नाम पर होने वाले बड़े खेल पर रोक लगेगी और देश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। अब देखने वाली बात यह होगी कि इस 'सर्जिकल स्ट्राइक' के बाद सोने के कारोबार में कितनी पारदर्शिता आती है और कितने बड़े चेहरे बेनकाब होते हैं।

जन जन की बात जन जन तक साप्ताहिक
जन जन विचार
RNI Regd No. ASMUL/25/A2367

Head Office : Golapi Market, 1st Floor, Beltola, Guwahati 781029
Branch Office : JanJan Vichar, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati - 781005
Contact : 69001 26012
Email. official.janjanvichar@gmail.com
Website: WWW.janjanvichar.in

ग्राहक सदस्यता फॉर्म

ग्राहक विवरण

पूरा नाम : ....
पूरा पता : ....
....
मोबाइल : .... ह्वाट्सएप ....
ई-मेल (यदि हो) : ....

सदस्यता विवरण
अवधि : 1 वर्ष शुल्क : रु. 500/- मात्र

सदस्यता के साथ विज्ञापन लाभ
- सालभर (52 अंक) का अखबार निःशुल्क मिलेगा
- एक निःशुल्क विज्ञापन (10 सेमी. x 3 कॉलम)
- विज्ञापन प्रकाशन की तिथि ग्राहक की सुविधा अनुसार

भुगतान विवरण
☐ यूपीआई ☐ बैंक ट्रांसफर
Bank Details
JAN JAN VICHAR
Bank : HDFC, Branch : Guwahati
A/C No. 50200116979015
IFSC : HDFC0000264
इस क्यूआर कोड को स्कैन कर जन जन विचार के बैंक खाते में सीधे भुगतान कर सकते हैं।
(कृपया उपरोक्त में किसी एक माध्यम से ही भुगतान करें।)
भुगतान तिथि : .... रसीद संख्या:..................

घोषणा
मैं स्वेच्छा से जन जन विचार साप्ताहिक अखबार की एक वर्ष की सदस्यता ग्रहण करता/करती हूँ एवं सभी शर्तों से सहमत हूँ।

ग्राहक के हस्ताक्षर : तिथि :

कार्यालय उपयोग हेतु
सदस्यता क्रमांक: .... भुगतान प्राप्त रसीद संख्या:.................. प्राप्तकर्ता का नाम : ....
तिथि : .... हस्ताक्षर : ....

12वीं के बाद नर्सिंग में सुनहरा भविष्य

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

हर साल लाखों छात्र डॉक्टर बनने का सपना लेकर नीट परीक्षा में शामिल होते हैं, लेकिन हर किसी को एमबीबीएस में दाखिला नहीं मिल पाता। ऐसे में कई छात्र निराश हो जाते हैं और उन्हें लगता है कि अब मेडिकल क्षेत्र में करियर बनाना मुश्किल है। जबकि सच्चाई यह है कि स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में नर्सिंग आज सबसे तेजी से बढ़ता और सम्मानजनक करियर बन चुका है। भारत में अस्पतालों, मेडिकल कॉलेजों और हेल्थ सेंटरों की संख्या लगातार बढ़ रही है। इसके साथ ही प्रशिक्षित नर्सों की मांग भी तेजी से बढ़ रही है। यही कारण है कि आज नर्सिंग केवल सेवा का क्षेत्र नहीं, बल्कि सुरक्षित नौकरी, सम्मान और अच्छे वेतन वाला प्रोफेशन बन गया है।

12वीं के बाद छात्र सीधे एएनएम, जीएनएम और बीएससी नर्सिंग जैसे कोर्स में दाखिला लेकर मेडिकल क्षेत्र में अपना भविष्य बना सकते हैं। सबसे खास बात यह है कि इसके लिए नीट पास करना अनिवार्य नहीं होता।

कौन-कौन से हैं प्रमुख कोर्स ?

एएनएम (ऑक्सिलियरी नर्सिंग एंड मिडवाइफरी): यह एक डिप्लोमा कोर्स है, जिसमें छात्रों को बेसिक हेल्थकेयर और मरीजों की देखभाल की ट्रेनिंग दी जाती है। किसी भी स्ट्रीम से 12वीं पास छात्र इसमें प्रवेश ले सकते हैं। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं में एएनएम की बड़ी भूमिका होती है।

जीएनएम (जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी): तीन वर्षीय यह कोर्स नर्सिंग क्षेत्र का लोकप्रिय विकल्प माना जाता है। इसमें मरीजों की देखभाल, अस्पताल प्रबंधन और मेडिकल सहायता की ट्रेनिंग दी जाती है। साइंस स्ट्रीम से 12वीं पास छात्र इसमें दाखिला ले सकते हैं।

बीएससी नर्सिंग : चार वर्षीय यह कोर्स नर्सिंग क्षेत्र का सबसे प्रतिष्ठित कोर्स माना जाता है। इसमें प्रवेश के लिए 12वीं में फिजिक्स, केमिस्ट्री और बायोलॉजी होना जरूरी है। यह कोर्स करने के बाद सरकारी और निजी अस्पतालों में बेहतर अवसर मिलते हैं।

कहां मिल सकता है दाखिला ?

देश के कई सरकारी और निजी संस्थान नर्सिंग कोर्स कराते हैं। इनमें प्रमुख हैं-

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली

क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज (सीएमसी), वेल्लोर

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ

पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, चंडीगढ़

इन संस्थानों में पढ़ाई करने वाले छात्रों को देश-विदेश में नौकरी के अवसर मिलते हैं।

सैलरी और भविष्य

सरकारी अस्पतालों में शुरुआती वेतन 50 हजार से 80 हजार रुपए तक पहुंच सकता है, जबकि निजी अस्पतालों में शुरुआत 20 से 25 हजार रुपए प्रतिमाह से होती है। अनुभव बढ़ने के साथ वेतन और पद दोनों में तेजी से वृद्धि होती है। विदेशों में भी भारतीय नर्सों की भारी मांग है।

पहाड़ों और कहानियों के जादूगर रस्किन बॉन्ड

रस्किन बॉन्ड भारत के सबसे प्रिय और लोकप्रिय लेखकों में गिने जाते हैं। उनका जन्म 19 मई 1934 को कसौली में हुआ था। बचपन से ही उन्हें किताबें पढ़ने और प्रकृति के बीच समय बिताने का शौक था। उनकी कहानियों में पहाड़ों की सुंदरता, जंगलों का रोमांच और साधारण लोगों का जीवन बहुत ही सरल और भावनात्मक ढंग से दिखाई देता है।

रस्किन बॉन्ड ने बच्चों के लिए अनेक प्रेरणादायक और मनोरंजक कहानियां लिखीं। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकों में द ब्लू अंब्रेला, रूम ऑन द रूफ, रस्टी श्रृंखला और टाइम स्टॉप्स एट शामली शामिल हैं। उनकी भाषा इतनी सरल होती है कि बच्चे आसानी से उनकी कहानियों से जुड़ जाते हैं।

उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, पद्मश्री और पद्मभूषण जैसे सम्मान प्राप्त हुए हैं।

बिपिन चंद्र पाल : स्वदेशी की मशाल जलाने वाले वीर

भारत की आजादी की लड़ाई में कई महान नेताओं ने अपना जीवन देश के लिए समर्पित कर दिया। उन्हीं में से एक थे बिपिन चंद्र पाल। उन्हें 'बंगाल का टाइगर' और 'क्रांतिकारी विचारों का जनक' कहा जाता था। उनके जोशीले भाषण और साहसी विचारों ने लाखों भारतीयों के मन में आजादी की लौ जलाई।

बिपिन चंद्र पाल का जन्म 7 नवंबर 1858 को सिलहट में हुआ था, जो आज बांग्लादेश में है। बचपन से ही वे तेज बुद्धि और देशभक्ति की भावना से भरे हुए थे। उन्होंने पढ़ाई के दौरान समाज की बुराइयों के खिलाफ आवाज उठानी शुरू कर दी। वे जात-पात और अंधविश्वास के विरोधी थे।

जब अंग्रेजों ने 1905 में बंगाल का विभाजन किया, तब पाल जी ने देशवासियों से विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने और स्वदेशी

वस्तुओं को अपनाने का आह्वान किया। वे कहते थे- 'जो देश अपने सामान का सम्मान नहीं करता, वह कभी मजबूत नहीं बन सकता।'

वे लाला लाजपत राय और बाल गंगाधर तिलक के साथ 'लाल-बाल-पाल' की प्रसिद्ध तिकड़ी का हिस्सा थे।

20 मई 1932 को उनका निधन हो गया, लेकिन उनके विचार आज भी हमें आत्मनिर्भरता, साहस और देशप्रेम की सीख देते हैं।

भारत को मिल गया अगला सुपरस्टार

जन जन विचार
...✍ स्पोर्ट्स डेस्क

भारतीय क्रिकेट में नई पीढ़ी की दस्तक अब केवल चर्चा नहीं, बल्कि हकीकत बनती जा रही है। श्रीलंका में होने वाली त्रिकोणीय सीरीज के लिए इंडिया-ए टीम की घोषणा ने साफ संकेत दे दिया है कि भारतीय क्रिकेट अब भविष्य की मजबूत नींव तैयार करने में जुट चुका है। सबसे बड़ी चर्चा 15 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी की एंट्री को लेकर है, जिसने इतनी कम उम्र में इंडिया-ए टीम में जगह बनाकर पूरे देश का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है।

इंडिया-ए का स्क्वाड

तिलक वर्मा (कप्तान), प्रियांश आर्य, वैभव सूर्यवंशी, रियान पराग (उपकप्तान), आयुष बदोनी, निशांत सिंधु, हर्ष दुबे, सूर्यांश शेडगे, प्रबसिमरन सिंह (विकेटकीपर), कुमार कुशाग्र (विकेटकीपर), विपराज निगम, यश ठाकुर, युधवीर सिंह, अंशुल कंबोज, अरशद खान।

आईपीएल 2026 में अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी से तहलका मचाने वाले वैभव अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर की चुनौती के करीब पहुंच चुके हैं। यह चयन सिर्फ एक खिलाड़ी का चयन नहीं, बल्कि भारतीय क्रिकेट की बदलती सोच की कहानी है। अब उम्र नहीं, प्रदर्शन मायने रखता है। यही वजह है कि चयनकर्ताओं ने अनुभवी चेहरों की बजाय युवा जोश पर भरोसा जताया है। टीम की कप्तानी तिलक वर्मा को सौंपना भी एक बड़ा संदेश है। तिलक ने पिछले कुछ वर्षों में अपनी बल्लेबाजी से यह साबित किया है कि वह दबाव में टीम को संभाल सकते हैं। वहीं रियान पराग को उपकप्तान बनाकर टीम मैनेजमेंट ने यह संकेत दिया है कि आने वाले वर्षों में भारतीय क्रिकेट की कमान इन्हीं युवा हाथों में रहने वाली है। इस टीम में आयुष बदोनी, प्रियांश आर्य, निशांत सिंधु और अंशुल कंबोज जैसे खिलाड़ी भी हैं, जिन्होंने घरेलू क्रिकेट और आईपीएल में लगातार प्रभावित किया है। यानी यह केवल एक सीरीज नहीं, बल्कि 'टीम इंडिया 2030' की पहली झलक मानी जा सकती है।

अब निगाहें श्रीलंका दौरे पर होंगी। यदि ये युवा वहां भी अपना दम दिखाते हैं, तो भारतीय क्रिकेट का भविष्य और भी सुनहरा दिखाई देगा। जनता के बीच यही चर्चा है-क्या वैभव सूर्यवंशी सचमुच भारत का अगला विराट या रोहित बनने जा रहा है?

स्विंग का सुल्तान फिर लौटा भुवनेश्वर की दूसरी उड़ान

जन जन विचार
...✍ स्पोर्ट्स डेस्क

कभी भारतीय क्रिकेट की नई गेंद की सबसे भरोसेमंद आवाज रहे भुवनेश्वर कुमार आज फिर आईपीएल 2026 में अपने प्रदर्शन से साबित कर रहे हैं कि अनुभव और अनुशासन का कोई विकल्प नहीं होता। चार साल से भारतीय टी-20 टीम से बाहर रहने के बावजूद भुवनेश्वर ने हार नहीं मानी। बल्कि उन्होंने खुद को और मजबूत बनाया।

36 वर्ष की उम्र में, जब कई तेज गेंदबाज रफ्तार और फिटनेस से जूझते हैं, तब भुवनेश्वर आईपीएल में पर्पल कैप के साथ बल्लेबाजों के लिए सबसे बड़ा खतरा बने हुए हैं। उनकी स्विंग, नकल बॉल और डेथ ओवरों की सटीक गेंदबाजी ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को शीर्ष टीमों में बनाए रखा है।

भुवनेश्वर की सबसे बड़ी ताकत उनका शांत दिमाग है। भारतीय टीम से बाहर होने के दर्द को उन्होंने कमजोरी नहीं बनने दिया। उनका कहना है कि स्वीकार करना मुश्किल होता है, लेकिन जब आप उसे स्वीकार कर लेते हैं, तब सोच बदल जाती है। यही सोच उन्हें बाकी खिलाड़ियों से अलग बनाती है।

आज का टी-20 क्रिकेट बल्लेबाजों का खेल माना जाता है, जहां 200 रन भी सुरक्षित नहीं माने जाते। लेकिन भुवनेश्वर मानते हैं कि विकेट ही गेंदबाज की असली ताकत है। यही कारण है कि उन्होंने समय के साथ खुद को बदला, नई गेंदबाजी तकनीकें सीखीं और फिटनेस पर पहले से अधिक मेहनत की।

उनकी कहानी सिर्फ क्रिकेट नहीं, बल्कि संघर्ष, धैर्य और आत्मविश्वास की कहानी है। भुवनेश्वर कुमार यह संदेश देते हैं कि अगर मेहनत और अनुशासन बना रहे, तो वापसी हमेशा संभव है। उम्र केवल एक संख्या है, असली ताकत मन और इरादों में होती है।

लियाम डॉसन ने चुना व्हाइट-बॉल

इंग्लैंड के अनुभवी ऑलराउंडर लियाम डॉसन ने फर्स्ट-क्लास यानी रेड-बॉल क्रिकेट से संन्यास लेकर क्रिकेट जगत को चौंका दिया है। 36 वर्षीय डॉसन अब अपना पूरा ध्यान व्हाइट-बॉल क्रिकेट पर केंद्रित करेंगे। उनके इस फैसले के साथ ही हैम्पशायर काउंटी क्रिकेट क्लब के इतिहास का एक यादगार अध्याय भी समाप्त हो गया।

डॉसन ने अपने लंबे करियर में 218 फर्स्ट-क्लास मैच खेलते हुए 10,828 रन बनाए और 18 शतक जड़े। गेंदबाजी में भी उन्होंने शानदार प्रदर्शन करते हुए कई मौकों पर टीम को जीत दिलाई। भारत के खिलाफ टेस्ट डेब्यू में नाबाद 66 रन की पारी आज भी याद की जाती है।

डॉसन का कहना है कि यह फैसला आसान नहीं था, लेकिन वह अपने व्हाइट-बॉल करियर को लंबा और प्रभावशाली बनाना चाहते हैं। आधुनिक क्रिकेट के बदलते दौर में कई खिलाड़ी अब छोटे फॉर्मेट को प्राथमिकता दे रहे हैं, जहां फिटनेस, तेज खेल और लगातार लीग क्रिकेट का बड़ा महत्व है।

डॉसन ने हैम्पशायर के लिए कई ऐतिहासिक प्रदर्शन किए। 2023 में उन्होंने एक ही मैच में शतक और 10 विकेट लेकर इतिहास रच दिया। उनके योगदान ने हैम्पशायर को इंग्लैंड की मजबूत काउंटी टीमों में शामिल किया।

यह संन्यास केवल एक खिलाड़ी के फैसले की कहानी नहीं, बल्कि बदलते क्रिकेट युग की तस्वीर भी है, जहां खिलाड़ी अपने शरीर, फिटनेस और करियर की लंबी योजना को ध्यान में रखकर फैसले ले रहे हैं।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

मंत्रिमंडल में दिखा...

क्षेत्र-इन सभी समीकरणों को साधने की कोशिश इस मंत्रिमंडल विस्तार में साफ दिखाई देती है।

रामेश्वर तेली को ट्रांसफॉर्मेशन एंड डेवलपमेंट, श्रम कल्याण और चाय जनजाति-आदिवासी कल्याण जैसे विभाग देकर भाजपा ने चाय बागान समुदाय को बड़ा राजनीतिक संदेश दिया है। ऊपरी असम की राजनीति में यह वर्ग लंबे समय से निर्णायक माना जाता रहा है।

वहीं अतुल बोरा को पंचायत एवं ग्रामीण विकास, असम समझौता क्रियान्वयन और सीमा विकास जैसे अहम विभाग देकर सरकार ने असम आंदोलन की विरासत और क्षेत्रीय भावनाओं को फिर मजबूत करने की कोशिश की है। यह विभाग सीधे ग्रामीण वोटबैंक और अस्मिता की राजनीति से जुड़े हैं।

अजंता नेउग को महिला एवं बाल विकास और पर्यटन विभाग देकर महिला नेतृत्व को प्रमुखता देने का संदेश दिया गया है।

वहीं चरण बोड़ो को परिवहन और बोडोलैंड कल्याण विभाग सौंपना बीटीआर क्षेत्र में एनडीए गठबंधन को और मजबूत करने की रणनीति माना जा रहा है।

स्पष्ट है कि यह केवल विभागों का बंटवारा नहीं, बल्कि 2026 के बाद के राजनीतिक समीकरणों की तैयारी भी है। भाजपा और उसके सहयोगी दल यह समझ चुके हैं कि असम की राजनीति केवल विकास के मुद्दों से नहीं, बल्कि सामाजिक पहचान, क्षेत्रीय संतुलन और समुदाय आधारित प्रतिनिधित्व से भी तय होती है।

अब जनता की नजर इस पर होगी कि ये मंत्री केवल राजनीतिक संतुलन तक सीमित रहते हैं या वास्तव में अपने-अपने विभागों में जमीन पर बदलाव ला पाते हैं। आखिरकार सत्ता की असली परीक्षा घोषणाओं से नहीं, काम के परिणामों से होती है।

मणिपुर : बंधक बने लोग..

दुखद यह है कि आम नागरिक अब केवल दर्शक नहीं, बल्कि इस संघर्ष के सबसे बड़े शिकार बन गए हैं। परिवार डर में जी रहे हैं, गांव असुरक्षा में डूबे हैं और समुदायों के बीच खाई लगातार गहरी होती जा रही है।

सरकार का यह कहना कि कुछ ताकतें मणिपुर में शांति नहीं चाहतीं, गंभीर संकेत है। यदि सचमुच ऐसे तत्व सक्रिय हैं, तो उन्हें पहचानकर कठोर कार्रवाई करना सरकार की जिम्मेदारी है। केवल सुरक्षा बैठकों और बयानबाजी से हालात नहीं बदलेंगे। मणिपुर आज केवल पूर्वोत्तर का मुद्दा नहीं, बल्कि पूरे देश की संवेदनशील परीक्षा बन चुका है। यदि नागरिक अपने ही राज्य में सुरक्षित महसूस न करें, तो विकास और लोकतंत्र के सारे दावे कमजोर पड़ जाते हैं। अब जरूरत राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप से ऊपर उठकर भरोसे की बहाली, निष्पक्ष कार्रवाई और स्थायी शांति की है। वरना हिंसा की यह आग आने वाले समय में और भयावह रूप ले सकती है।

प्रसाद भगवान का आशीर्वाद, दें सम्मान

जन जन विचार
...✍ धर्म डेस्क

सनातन धर्म में प्रसाद को सिर्फ भोजन नहीं, बल्कि भगवान का आशीर्वाद माना जाता है, जिसके प्रति सम्मान की भावना रखना बेहद जरूरी है। मंदिर हो या घर का पूजा कक्ष जब कोई चीज भगवान को भोग के लिए अर्पित की जाती है, तो वह प्रसाद बन जाती है।

यही कारण है कि, प्रसाद का सम्मान करना धार्मिक नजरिए से बेहद महत्वपूर्ण माना गया है। लेकिन कई बार जाने-अनजाने प्रसाद हाथ से नीचे गिर जाता है या जमीन पर फैल जाता है। ऐसे में कई लोगों को पता नहीं होता कि इस प्रसाद का करना क्या है?

प्रसाद का गिरना शुभ नहीं

धार्मिक नजरिए से देखा जाए तो प्रसाद का गिरना हमेशा शुभ संकेत नहीं माना जाता। कई जानकार इसे लापरवाही या असावधानी से जुड़ी घटना मानते हैं, न कि किसी अपशकुन का संकेत। ऐसे में जो प्रसाद भगवान को अर्पित किया जा चुका है, उसके साथ सम्मानजनक व्यवहार करना बेहद जरूरी माना गया है।

प्रसाद के महत्व को लेकर श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 3, श्लोक 13 में बताया है कि-

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥

अर्थात- यज्ञ होने के बाद अन्न (प्रसाद) को ग्रहण करने वाले पुरुष सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं। लेकिन जो व्यक्ति केवल अपने शरीर के पोषण के लिए ही भोजन ग्रहण करता है, वे पापी केवल पाप भोग रहा है।

प्रसाद गिर जाए तो क्या करें

धार्मिक विशेषज्ञों के जानकार बताते हैं कि, अगर प्रसाद किसी साफ स्थान पर गिर जाए, तो उसे सम्मानपूर्वक उठाकर किसी साफ स्थान पर रखा जा सकता है। अगर प्रसाद जमीन पर गिरने के बाद भी पूरी तरह से अशुद्ध नहीं हुआ है, तो उसे गाय, पक्षियों या पालतू जानवर को खिलाया जा सकता है।

वहीं अगर प्रसाद मिट्टी, गंदगी, जूते-चप्पलों वाली जगह पर गिर जाए, तो ऐसे में उसे खाने से बचना चाहिए साथ ही उसे किसी पेड़ के पास रख दें।

कई लोग ऐसे हालात में फौरन भगवान से माफी मांगने लगते हैं और दोबारा श्रद्धा के साथ प्रसाद अर्पित करते हैं। धार्मिक नजरिए से पूजा के दौरान दिखावे से ज्यादा भावना और सम्मान का अधिक महत्व होता है। ऐसे में अगर आपसे अनजाने में गलती हुई है, तो इसे बड़ा दोष नहीं मानना चाहिए।

बची हुई चायपत्ती भी बड़े काम की

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

लोग चाय के बिना तो अपने दिन तक की शुरुआत नहीं करते हैं। हर मौके को खास बनाना हो या थकान को मिटाना हो, चाय तो जरूरी होती ही है। कई बार लोग चाय बनाने के बाद बची हुई चायपत्ती को कचरे में फेंक देते हैं या सीधे सिंक में डाल देते हैं। इसका बेहतर उपयोग किया जा सकता है।

पौधों के लिए प्राकृतिक खाद

अगर आप बची हुई चायपत्ती को कचरे में फेंक देते हैं, तो यह गलती करने से पहले इसके यूज के तरीकों को आपको जान लेना चाहिए। आप इससे खाद को आसानी से बना सकते हैं। सीधे मिट्टी में मिलाकर पौधों में डाल सकते हैं। पौधों की ग्रोथ को बेहतर बनाने में यह मददगार होती है। मिट्टी की गुणवत्ता सुधारने के लिए आप इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

घर की बदबू दूर करने में मददगार

बची हुई चायपत्ती का इस्तेमाल करके आप घर की बदबू को आसानी से दूर कर सकते हैं। चायपत्ती

को अच्छी तरह से आपको सुखा लेना है और फिर कटोरी में भरकर फ्रिज में रख दें और फिर इसका इस्तेमाल आप एयर फ्रेशनर के रूप में कर सकते हैं।

बालों को चमकदार बनाने का नुस्खा

यह फेंकने वाली चीज, बची हुई चायपत्ती आपके बालों के लिए काफी ज्यादा फायदेमंद मानी जाती है। इस्तेमाल की हुई चायपत्ती को आपको उबाल लेना है और फिर ठंडा होने के बाद उससे अपने बालों को धो देना है। इससे बाल मुलायम और चमकदार बनते हैं, इसको आप रोजाना भी बालों में लगा सकते हैं।

बर्तनों और फर्नीचर की सफाई

आपको बता दें बची हुई चायपत्ती का इस्तेमाल आप बर्तनों की सफाई के लिए भी कर सकते हैं। चायपत्ती को पानी में उबालकर फिर उसी पानी से आप अपने बर्तनों को साफ करके धो सकते हैं, आपको कमाल के असर देखने को मिल सकते हैं।

फर्श और फर्नीचर की सफाई के लिए भी आप बची हुई चायपत्ती का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसको फिर से पानी में उबाल लें और फिर ठंडा होने पर कपड़े की मदद से अच्छे से आप साफ कर सकते हैं।

'दीदी गो' विवाद पर उषा उत्थुप की सफाई

पश्चिम बंगाल की राजनीति में बदलाव के बाद सोशल मीडिया पर एक पुराना वीडियो अचानक नई बहस का कारण बन गया। मशहूर गायिका उषा उत्थुप का बंगाली गीत 'दीदी गो' इंटरनेट पर तेजी से वायरल हुआ और इसे ममता बनर्जी की चुनावी हार से जोड़कर प्रचारित किया जाने लगा। कुछ सोशल मीडिया पोस्टों में दावा किया गया कि उषा उत्थुप ने यह गीत ममता बनर्जी का मजाक उड़ाने के लिए गाया और वह कोलकाता छोड़कर मुंबई चली गई हैं।

हालांकि, वायरल दावों पर अब खुद उषा उत्थुप ने चुप्पी तोड़ दी है। उन्होंने साफ कहा कि यह वीडियो 25 साल से भी ज्यादा पुराना है और इसे राजनीतिक रंग देना पूरी तरह गलत है। अपने सोशल मीडिया बयान में उन्होंने कहा कि उन्हें 'जबरदस्ती की कंट्रोवर्सी' में न घसीटा जाए।

उषा उत्थुप ने यह भी स्पष्ट किया कि उन्होंने कभी कोलकाता नहीं छोड़ा। 1976 से वह इसी शहर में रह रही हैं और कोलकाता को अपना घर मानती हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें इस शहर और यहां के लोगों से बेहद प्यार है।

दरअसल, चुनाव परिणाम आने के बाद सोशल मीडिया पर कुछ यूजर्स ने पुराने वीडियो को नए राजनीतिक संदर्भ में साझा करना शुरू कर दिया। देखते ही देखते यह वीडियो वायरल हो गया और कई तरह की अफवाहें फैलने लगीं।

यह घटना एक बार फिर दिखाती है कि सोशल मीडिया के दौर में पुराने वीडियो और बयानों को नए संदर्भ में पेश कर भ्रम फैलाना कितना आसान हो गया है। बिना तथ्य जांचे वायरल सामग्री पर भरोसा करना किसी कलाकार या व्यक्ति की छवि को नुकसान पहुंचा सकता है।

पूर्वांचल प्रिंटर्स की ओर से राजनाथ पाल द्वारा जीएमसीएच रोड, हरबाला मार्केट, भांगागढ़, गुवाहाटी-781005 से प्रकाशित एवं मुद्रित। संपर्क : 69001 26012
ई-मेल:official.janjanvichar@gmail.com, वेबसाइट: www.janjanvichar.in
● कार्यकारी संपादक : सुभाष कुमार चौधरी ●संपादक : धनेश्वर चौधरी